त्रयोदशी से लक्ष्मी पूजा तक : ज्ञातव्य
(01से 05 नवम्बर, 2013)

☐ **दीपक :–**

- **"सौभाग्य"** के लिये महिलाओं को महुऐ के तैल का दीपक प्रज्वलित करना चाहिये। चमेली तैल या शुद्ध **घी का दीपक** विशेष उपयोगी।
- बाधा एवं क्लेश से मुक्ति हेतु तिल के तैल का दीपक प्रज्वलित करें ।
- **दीपक वर्तिका दिन** में उत्तर दिशा, **सांय** उपरांत **पश्चिम** दिशोन्मुखी हो एवं लक्ष्मी, ध्यान पूजा में **पश्चिम** दिशा श्रेष्ठ होती है ।
- एक **सुपारी** पर कलावा बांध कर सिंदूर लगाऐं एवं कलश पर रखें। पूजा के बाद चावल के साथ बांध कर रखें। धन प्राप्ति वृद्धि के लिये उपयोगी है।

☐ **कलश :–**

- चावल का आठ पंखुरी वाला कमल बनाकर उस पर कलश रखें जिसमें पानी, मोती तथा आम, पीपल, अपराजिता, वट के पत्ते डालें। कलश पर चावल भरी कटोरी उस पर नारियल रखें। कलश पर नारियल का मोटा भाग आपकी ओर हो। कलश पर स्वस्तिक बनाऐं। रोली, चंदन एवं सुगंध मिलाकर **"श्री" ह्रीं** लिखें।

☐ **वस्त्र :–**

- पीले या लाल वस्त्र पहन कर पूजा करना श्रेष्ठ है। वस्त्र शुभ मुहुर्त एवं दिन पहनें। पुरूषों को पीले एवं महिलाओं को लाल रंग मिश्रित वस्त्र धारण करना चाहिये। नूतन वस्त्र बुधवार, गुरूवार, शुक्रवार को शुभ समय में पहनें।
- **शंख** में पानी भरकर पूजा स्थल का छिड़काव करें ।
- धन त्रयोदशी से भाई दूज तक **शंख** को पानी में डालकर रखे, उसका पानी पीना अलक्ष्मीनाश एवं स्वास्थ्य सफलताप्रद है ।
- प्रतिदिन **शंख** ध्वनि भी करे प्रातः – सांय। इससे (स्वास्थ्य वृद्धि एवं वातावरण शुद्ध कीटाणु रहित होता है।
- केसर, हल्दी तथा चंदन मिलाकर तिलक लगाऐं। (**कांति लक्ष्मी घृति सौरण्यं सौभाग्यं अतुलं मम् (नाम), ददातु चंदनं धारियामि। केशवं अनंत गोविंद वाराह पुरूषोत्तम पुण्यं यशस्यम् धनं आयुष्यं तिलकं मे प्रसीदत्तु**)
- पीपल के पेड़ के नीचे शकर, पैसा, सुपारी हल्दी रख कर उसका पत्ता घर ले आऐं। उसे तिजोरी (केश बाक्स) में अर्धरात्रि को रख दें। धन सुरक्षा एवं वृद्धि का सरल उपाय है।
- **काले तिल** परिवार के सदस्यों के सिर पर तीन बार घुमाकर उत्तर, पश्चिम एवं दक्षिण दिशा में फेंक दें। इससे स्वास्थ्य तथा टोने टोटकें से सुरक्षा होती है ।

अकाल मृत्यु (यमदेव की पूजा) से सुरक्षा का पर्व धनतेरस व धन्वन्तरि जयंती

- **त्रयोदशी** की रात्रि एवं दीपावली रात्रि को **पितरों** का स्मरण करें। उनका ध्यान एवं उनमें आशीर्वाद के लिये (दक्षिण दिशा) में कामना करें। आकाशगामी पटाखें छोड़े। दक्षिण में मुंह कर दीप रखें। दिन में काले तिल हाथ में लेकर तर्पण करें। तिल दान करना भी लाभदायी होता है।

- त्रयोदशी से भाई दूज तक प्रातः एवं सांय घर में झाड़ू लगाकर ''दरिद्रता नाश'' की भावना करें। प्रातः के पूर्व घर से न निकले।
- धनतेरस (काल रात्रि) शाम से भाई दूज तक या तो पांच दिन दीप प्रज्वलित करें अथवा प्रतिदिन शाम से दूसरे दिन संध्या तक 24 घंटे का अखण्ड दीप जलाऐं। दीपक तैल (तिल, सरसो, घी, महुआ, चमेली का तैल) का विशेष उपयोगी होता है।
- त्रयोदशी से दीपावली तक यम पूजा से स्वास्थ्य उत्तम होता है।
- धनतेरसः– (महाकाली) रूपचतुर्दशी (महालक्ष्मी) दीपावली (महासरस्वती– सिद्धप्रदायनी) के रूप में आगमन करती है।
- त्रयोदशी को हल्दी की गांठ, श्वेत गुंजा, केसर, साबुत धनिया, कमलगट्टा, एक सुपाड़ी, शमीपत्ता, साबुत 5 चावल, खड़ा नमक पूजा कर एक लाल वस्त्र में बांधकर उसे केश बाक्स या धन स्थान पर रख लें।
- त्रयोदशी से भाई दूज तक घर के सामने सुंदर रंगोली डाले। द्वार स्वच्छ रखे । द्वार पूजा करें। **स्वस्तिक** बनाऐं । आम के पत्ते द्वार पर लगाऐं। द्वार सजावट एवं पूजा त्रयोदशी से भाई दूज तक नित्य करें।
- अकाल मृत्यु :– (चोट, विष आदि) के प्रतिरक्षण हेतु वैदिक मृत्यु देव 'यम' की प्रसन्नता हेतु, गृह द्वार पर चार बत्ती वाला (चारों दिशाओं में बत्तियां हों) सरसों या तिल तैल का दीपक प्रज्वलित कर **''यमाय नमः''** 5 बार कहें। जल, चावल, गुड़, शक्कर अर्पित करें।
- चांदी के बर्तन खरीदना विशेष शुभ माना जाता है। स्टील के बर्तन (विशेषतः पूजा हेतु) शुभ नहीं माने गऐ हैं।
- हलजुती (खेत) की मिट्टी दूध में भिगोकर सेमर की शाखा/लकड़ी डुबोकर तीन बार अपने शरीर पर आपादमस्तक (ऊपर से नीचे) स्पर्श करें। तथा रोली मस्तक पर लगाऐं।
- संध्या समय सूर्योस्तः से 48 मिनट में घर की तीन दिशाओं में एक–एक दीपक जलाऐं दीपक वर्तिका उत्तर दिशा में दीपक उत्तर की ओर; दक्षिण दिशा की दक्षिण दिशा की ओर एवं पश्चिम दिशा के दीपक की पश्चिम दिशा की ओर होना चाहिऐ।

स्वच्छता का पर्व नरक चतुर्दशी :–

1. सूर्योदय से पूर्व (प्रातः 4 से 6 तक) शरीर में तैल, बेसन, हल्दी लगाने के पश्चात् स्नान करें। ऐसी मान्यता है कि **सूर्योदय पूर्व स्नान** नहीं करने से धन संबंधित बाधाऐ साल भर रहती है।

- स्नान उपरांत दक्षिण दिशा में मुंह कर यमाय नमः तीन बार कह कर तीन अंजलि जल यम को अर्पित करें।
- **नरक चतुर्दशी** को सूर्योदय से पूर्व तैल लगाकर स्नान करें। यम की प्रसन्नता हेतु दोपहर एवं संध्या समय दीपक दक्षिण दिशा में **(यमाय नमः)** रखें।

लक्ष्मी पर्व दीपावली :–12.32से13.07;18.35से19.35;23.40से 00.40

1. 'ब्रह्मपुराण' के अनुसार अर्धरात्रि के समय देवी लक्ष्मी विचरण करती है। अतः उनकी प्रसन्नता के लिऐ घर–बाहर स्वच्छता/सजावट एवं प्रकाश किया जाता है।
2. इस दिन सम्राट विक्रमादित्य का **राजतिलक** हुआ था।
3. वैश्य वर्ग अपना **नया वर्ष** बहीखाते बदलकर प्रारंभ करता है।
4. आज से **पितरों की रात्रि** प्रारंभ होती है। अतः आकाशदीप तथा आकाशगामी प्रकाश करने वाले उपाय (पटाखे) किये जाते हैं।
5. भाग्य की परख हेतु जुंआ खेलने का भी विधान है।
6. पूजा उपरांत चुने/गेरू में रूई भिगाकर सिल, सूप, चूल्हा आदि **(रसोई उपकरणों में)** को रंगा जाता है। रात्रि समाप्त होने पर सूप में घर का कचरा/कूड़ा दूर फेंकने का विधान है। **"लक्ष्मी जी आओ दरिद्रता जाओ" यह 5 बार कहना चाहिये ।**

पूजा के शुभ समय राशिवार

मेष : – आय नेतृत्व 12.10 से 16.00 बजे दिन, 11.32 से 12.00 . 19.45 से 21. 20,00.10:1.50बजे रात्रि विजय ।

वृषः व्यापार पद – 12.32 से 13.07 ––''––

मिथुनः विजय – 8.35 से 9.00 भाग्य वृद्धि 12.32 से 13.00; ।

कर्कः आय नेवृत्व – 11.35 से 12.00;18.22 से20.32 रात्रि ––''––

सिंहः आय नेतृत्व – 12.13 से 13.00 : व्यापार एवं पद – 6.35 से 7.30 ।

कन्याः पद, व्यापार – 8.35 से 9.00, भाग्यवृद्धि – 18.22 से 20.32 रात्रि ।

तुलाः आय, नेतृत्व – 11.35 से 12.00;भाग्यवृद्धि – 1.25 से 02.00 रात्रि ।

वृश्चिकः आय, नेतृत्व – 12.135 से 13.00, पद एवं व्यापार – 1.35–2.-20 रात ।

धनुः पद, व्यापार – 6.35 से 7.31, भाग्य वृद्धि – 18.35 से 19.35रात ।

मकरः शत्रु शमन, रोग शमन 6.35 से 7.30 रात्रि, भाग्यवृद्धि 8.35 से 9.00 बजे ।

कुंभः विजय, लंबित कार्य पूर्ण – 8.35 से 9.00 ; 11.35 से 12.00; ।

मीनः संतान सुख, प्रगति – 11.35 से 12.00बजे 12.32 से 13.00।

03नवम्बर, 2013– पूजा के शुभ समय एवं प्रभाव

- **प्रदोषकाल** – सांय 18:35 से रात्रि 19.20 बजे तक (वृषभ राशि हेतु 18..06 से 19.35.तक शुभ कार्य वर्जित)।
- **महानिशीथकाल** – यंत्र, तंत्र, मंत्र सिद्धि एवं सर्व सफलता की कामना पूर्ति/समय – 23.40 से 00.40 रात।

भगवान श्रीकृष्ण, चंद्रमा, इंद्र, अग्निदेव की पूजा का पर्व :– अन्नकूट, गोवर्धन

1. यह त्यौहार का द्वापर में श्री कृष्ण के द्वारा प्रारंभ हुआ। नाना प्रकार की भोजन सामग्री बनायें। बैल, गाय को स्नान कराऐं, सजाऐं। प्रातः श्री कृष्ण की पूजा करें। दोपहर में अग्नि या संध्या समय भगवान कृष्ण चंद्र, इन्द्र, अग्निदेव का स्मरण करें। संध्या समय दैत्यराज बलि की पूजा करें। रात्रि में चन्द्र दर्शन करें।